प्रयास

वर्ष : 17 अंक : 40 मार्च 2023

कारखाना कोटा में दिनांक 30-07-2022 को माननीय श्री विनय कुमार त्रिपाठी अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी रेलवे बोर्ड का निरीक्षण।

वैगन रिपेयर शॉप, पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा

कारख़ाने में उच्च अधिकारियों द्वारा किये गये निरीक्षण

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड
श्री विनय कुमार त्रिपाठी निरीक्षण करते हुए।

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री विनय कुमार त्रिपाठी
बीटीपीएन वैगन के सेन्टर सिल रिपेयर का निरीक्षण करते हुए।

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री विनय कुमार त्रिपाठी
के साथ महाप्रबंधक पमरे श्री सुधीर कुमार गुप्ता निरीक्षण बैठक के दौरान।

अपर महाप्रबंधक श्री शोभन चौधुरी
निरीक्षण करते हुए।

प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री आर.एस. सक्सेना साथ में मु. का. इंजी.
श्री नीरज कुमार हैरिटेज पार्क का निरीक्षण करते हुए।

प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री हामीद अख्तर
निरीक्षण करते हुए।

प्रयास

संरक्षक

सुधीर सरवरिया

मुख्य कारख़ाना प्रबंधक

सम्पादक

मनोहर लाल मीना

सहायक कार्मिक अधिकारी

सहयोग

मनोज कुमार मीना

मुख्य कार्यालय अधीक्षक (एच.आर.एम.एस. सेल)

राकेश कुमार मीना

वरिष्ठ अनुवादक

सम्पर्क सूत्र

मुख्य कारख़ाना प्रबंधक कार्यालय

पश्चिम मध्य रेल्वे, कोटा – 324002

फोन : रेल्वे – 017–45250, 45252

डोट : 074–2467074, 2466649

यह अंक स्व. शमशाद खान, वरिष्ठ अनुवादक (राजभाषा विभाग) को समर्पित है।

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	लेखक (सर्व श्री)	पृष्ठ
1.	संरक्षक की कलम से	मुख्य कारखाना प्रबंधक	3
2.	संपादकीय	सहायक कार्मिक अधिकारी	4
3.	अंग्रेज़ी में ग़ालिब	स्व. शमशाद खान	5
4.	भगवान बिरसा मुंडा–एक परिचय	एम.एल. मीना	9
5.	गीन सप्लाई चैन–एक परिचय	तारा चन्द	11
6.	आर.एफ.आई.डी. टैग एवं उनका उपयोग	सोनू कुमार मिश्रा	13
7.	स्वास्थ्य, खुशी, सफलता	राजेन्द्र सिंह राव	15
8.	भारतीय रेल में हिंदी पुस्तकालयों का महत्व एवं उपयोगिता	स्व. शमशाद खान	16
9.	कोटा कारखाना: एक परिचय	साभार	19
10.	राजभाषा पुरस्कार योजनाऐं	साभार	23

संरक्षक की कलम से...

प्रिय साथियों,

सर्वप्रथम मैं आप सभी को महाप्रबंधक पमरे के कर कमलों से राजभाषा पखवाड़ा 2022 के अवसर पर प्रदान की गई 'अन्तर कारखाना राजभाषा शील्ड' के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

गृह पत्रिकाएं कार्यालयों में संवाद स्थापित करने का सशक्त साधन होती हैं। ये पत्रिकाएं लोकमत को व्यक्त करने तथा राजभाषा के प्रयोग एवं प्रसार का श्रेष्ठ माध्यम भी हैं। इसी क्रम में राजभाषा अनुभाग, माडिमका, कोटा द्वारा प्रकाशित कारखाने की गृह पत्रिका 'प्रयास' का 40वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं बहुत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

भारतीय रेलों के इतिहास में माल–डिब्बा मरम्मत कारखाना, कोटा सदैव अग्रणी रहा है। इस कारखाने का अतीत गौरवशाली और वर्तमान बहुत समृद्धिशाली है। यह कारखाना अपने स्थापना काल से ही अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए उन्नत अनुरक्षण पद्यतियों को आत्मसात करता रहा है ।

हमारा कारखाना उच्च गुणवत्ता के साथ–साथ सतत् विकास की अपनी परंपरा को अक्षुण्ण बनाए हुए है और लगातार लक्ष्य से अधिक आउट–टर्न देने में सफल रहा है। वर्ष 2022–23 में हमारा आउट–टर्न लक्ष्य 6100 की तुलना में 6388 रहा जो लक्ष्य से 4.72% अधिक है जो कि कारखाने का अब तक का सर्वाधिक है। इस वर्ष भी हम अपने लक्ष्य से 0.18% अधिक (अप्रैल–2023 तक) उत्पादन दे चुके हैं।

सामाजिक मूल्यों के प्रति पूर्ण सजग इस कारखाने द्वारा ग्रीनको रेटिंग एवं 5S को अपनी कार्य प्रणाली का हिस्सा बनाया गया है। हमारा कारखाना IMS (आई.एस.ओ. 9001 : 2015, आई.एस.ओ. 14001 : 2015, आई.एस.ओ. 45001 : 2018, आई.एस.ओ. 50001 : 2018) तथा आई.एस.ओ. 3834 : 2005 प्राप्त करने में सफल रहा है। वर्तमान में कारखाना पूर्णतः सोलर पॉवर की दिशा में कारगर प्रयास कर रहा है।

कारखाने की प्रगति सामूहिक उत्तरदायित्वों पर निर्भर करती है। कारखाने के सभी अनुभाग अपने क्षेत्रों में सराहनीय कार्य कर रहे हैं। यह हमारे अधिकारियों, पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों के सार्थक परिश्रम, लगन तथा कर्तव्यनिष्ठा का ही परिणाम है कि कारखाना निर्धारित लक्ष्यों से अधिक आउट–टर्न देने में सफल रहा है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी कारखाना इसी प्रकार प्रगति–पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

मैं 'प्रयास' के 40वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर कारखाने के सभी अधिकारियों, संपादक मंडल, रचनाकारों तथा अन्य सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित !

सुधीर

सुधीर सरवरिया
मुख्य कारखाना प्रबंधक
कारखाना कोटा

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

कारखाना कोटा की गृहपत्रिका ''प्रयास'' अपने शानदार साहित्यिक सफ़र के 17वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। प्रयास कारखाने का दर्पण है। राजभाषा हिन्दी के माध्यम से कारखाने की गतिविधियों एवं प्रयासों को आपके समक्ष रखने की हमारी कोशिश लगातार जारी है। इस अवसर पर ''प्रयास'' का 40वां अंक अपने पाठकों को समर्पित करते हुए अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

मुख्य कारखाना प्रबंधक महोदय के संरक्षण, कुशल मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन से पुष्पित एवं पल्लवित हो रही 'प्रयास' के प्रकाशन का उद्देश्य जहां कर्मचारियों के विचारों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करना है, वहीं राजभाषा के प्रयोग के प्रति उन्हें प्रोत्साहित करना, भारत सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वित करना, राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों की ओर ध्यान आकृष्ट करना भी है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य हिन्दी के प्रयोग–प्रसार को बढ़ाना तथा दैनिक कार्यालयी कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग में अभिवृद्धि करना है।

हमारा विश्वास है कि 'प्रयास' कारखाने की सम्पूर्ण गतिविधियों से आपको परिचित कराने में सफल एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समय–समय पर बहुमूल्य परामर्श देने के लिए हम मुख्य कारखाना प्रबंधक महोदय को हार्दिक साधुवाद देते हैं और हम अपने लेखकों एवं सहयोगियों का भी आभार व्यक्त करते हैं। हम आशा करते हैं कि हमारे सुधी पाठक पत्रिका को भविष्य में और अधिक सूचना परक, उपयोगी एवं प्रेरणास्पद बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराकर हमारा उत्साह वर्धन करेंगे।

मनोहर लाल मीना
सहायक कार्मिक अधिकारी
कारखाना कोटा

अंग्रेज़ी में ग़ालिब

होगा कोई ऐसा भी कि 'ग़ालिब' को न जाने
शायर तो वो अच्छा है पै बदनाम बहुत है।
It is possible that some one should not know Ghalib?
A good poet-though of bad reputation
-Annemarie Sehimmel

ग़ालिब के इस आत्मकथन की पृष्ठभूमि में उनकी सर्जनात्मक तेजस्विता ओर विश्वास अवश्य रहा होगा। इस तरह का विश्वास मानवता की उच्चतम भूमि को प्राप्त करने के प्रयास से ही उत्पन्न होता है। देश और काल की सीमाओं को लॉघता हुआ कवि का यह भरोसा स्वयं का न रहकर प्रत्येक सहृदय का हो जाता है बल्कि हमारी जीवन आस्था का रुप ले लेता है। कला के सार्वजनीन होने की प्रक्रिया यही है। आज ग़ालिब को पढ़ने और समझने का रूझान तेजी के साथ बढ़ा है। उनकी शायरी के अनेक भाषाओं में अनुवाद हो रहे हैं। विशेषत: यह कार्य अंग्रेजी भाषा में द्रुतगति से हुआ है।

यूरोपीय विद्वानों में सबसे अधिक चाव और समर्पण के साथ ग़ालिब पर काम करने वालों में राल्फ़ रसेल हैं जिन्होंने ग़ालिब के अध्ययन को ब-हैसियत-ए एक मिशन की तरह लिया है। उनके द्वारा सम्पादित पुस्तक- "Ghalib: The poet and his Age" (1972) एक उत्कृष्ट मीमॉसा है। इस पुस्तक में पर्सीवल स्पियर, पी. हार्डी और ए. बैसानी के लेख भी सम्मिलित हैं। प्रोफेसर बैसानी ग़ालिब की गंभीर समीक्षा करने वाले प्रथम यूरोपीय विद्वान हैं। उन्होंने 1959 में "The position of Ghalib in the history of Urdu & Indo-Persian poetry" लेख लिखा था जो किसी भी यूरोपीय विद्वान का ग़ालिब पर लिखा गया पहला लेख है।

ग़ालिब के काव्य-विषयों पर लिखते हुये रसेल ने गहरी विवेक दृष्टि का परिचय दिया है। ग़ालिब का परंपरागत शायरी से भिन्न प्रस्थान और वैशिष्ट्य यह है कि वे प्रेम के साथ अपने संबंधों को नये ढंग से परिभाषित करते दिखाई देते हैं। बकौल रसेल वे अपने प्रेम के लिए कोई भी मुसीबत और बड़ी से बड़ी सजा यहाँ तक कि आत्म बलिदान के लिए भी तैयार दिखाई देते हैं। मध्यकालीन वातावरण में इश्क का यह तरीक़ा धार्मिक धरातल तक ही सीमित था। इसमें यथार्थ लापता था। रसेल ने ग़ालिब को लेकर ग़जल की स्थिति पर अति विशिष्ट बातें कही हैं। इसके संदर्भ में ग़ालिब के एक शेर-

बक़द्रे-शौक नहीं जर्फ-ए-तंगनाए-ग़जल
कुछ और चाहिए बुसअत मेरे बयॉ के लिए।

को लेकर समीक्षकों का मत है कि ग़ालिब को तात्कालिक ग़ज़ल की ज़मीन नाकाफ़ी महसूस होती थी। अत: वे किसी अन्य माध्यम से अपनी बात कहने के लिए बेचैन दिखाई देते हैं।

अनबिन ब्रदर्स लिमिटेड, लंदन द्वारा प्रकाशित राल्फ़ रसेल और ख़ुर्शीद इस्लाम द्वारा "Ghalib: Life and letters"

संपादित पुस्तक के दो भागों में से पहला ग़ालिब के व्यक्तित्व और दूसरा उनकी शायरी के अंग्रेजी अनुवाद से संबंधित है।

"Hidden in the lute: An Anthology of two centuries of Undu literature" पुस्तक में रसेल ने पिछली दो सदियों के दौरान विभिन्न विधाओं के उर्दू अदब की बानगी तथा साथ में ग़ालिब की ग्यारह ग़ज़लों का काव्यानुवाद दिया है। रदीफ़–क़ाफ़िया का बख़ूबी इस्तेमाल करते हुए कुछ शेरों का तर्जुमा वाक़ायदा अंग्रेज़ी में दिया गया है।

A dance of sparks: Immagary of fire in Ghalib's poetry (1979) मैं ग़ालिब की सर्जनात्मकता पर गहन विचार किया गया है। शिमेल महोदय के अनुसार ग़ालिब की ज़िंदगी मुस्लिम उच्च वर्ग के पतन एवं बिखरात के साथ इत्तिफ़ाक़न जुड़ी हुई थी। वस्तुतः उनकी शायरी में इस दर्द और गुढन को अनेक स्थानों पर अभिव्यक्ति मिली है।
जान मैरेक ने ग़ालिब के अध्ययन में ख़ास दिलचस्पी ली है। उनके अनुसार ग़ालिब ने दर्शनिक, रहस्यवादी और मानवता वादी विचारों को उर्दू और फ़ारसी दोनों भाषाओं में व्यक्त किया है। ग़ालिब ने मादरे वतन से इश्क और मुल्क़ परस्ती के विचारों को व्यक्त करने के लिए फारसी को ही बेहतर माध्यम समझा।

"A history of urdu iterature" में लाहौर के प्रोफेसर मुहम्मद साहिदक साहब ने ग़ालिब के अध्ययन में काफी बेबाक टिप्पणियॉ की हैं। वे कहते हैं कि ग़ालिब की शायरी से ज़िंदगी का जो फलसफा निकलता है उसमें नास्तिक होने की हद तक स्वच्छंदता का समावेश है। मसलन–

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिल के बहलाने को 'ग़ालिब' ख़याल अच्छा है।

इस पुस्तक में सादिक़ साहब ने ग़ालिब के जीवन दर्शन की तुलना जर्मन कवि हाइने (Heine) से की है।
पवन के. वर्मा की पुस्तक "Ghalib: The man, the time" काफी चर्चित रही है। उनके लिहाज़ से मिर्ज़ा ग़ालिब इ आत्म विश्वास का स्पष्ट संदेश देने का प्रयास करते दिखाई देते हैं कि–

लिखता हूँ असद सोज़िश–ए–दिल से सुख़न–ए–गर्म
ता न रख सके कोई मेरे हर्फ़ पर अंगुश्त।

From the burning of my heart
Are my couplets alight;
None can pace a finger
On a ward of what I say.

वर्मा जी ने ग़ालिब को वक्त पर फतह हासिल करने वाला शायर स्वीकार किया है। इस पुस्तक में जगह–जगह ग़ालिब के शेरों का अनुवाद भी किया गया है।

ग़ालिब को अध्ययन का विषय बनाकर परिचयात्मक ढंग से लिखी गयी के.एन. सूद की पुस्तक "Internal fame, (Aspects of Ghalib's ife and words) में 'दीवान–ए–ग़ालिब' के अंग्रेजी में उपलब्ध पूर्ण और आंशिक अनुवादों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसे अंग्रेजी में ग़ालिब की पठनीयता का एहसास होता है।

सुफिया सादुल्लाह की–'मिर्ज़ा ग़ालिब की चुनी हुई शायरी' (Selected verse of Mirza Ghalib) ग़ालिब की शायरी के अंग्रेजी अनुवाद की पुरानी किताबों में से एक है। इसमें ग़ालिब की पठनीयता का एहसास होता है।

1957 में जे.एन. कौल की "Interpritation of Ghalib" पुस्तक सामने आयी। इसकी भूमिका मौलाना आज़ाद ने लिखी है। इसमें ग़ालिब के चुनिंदा शेरों की व्याख्या एवं समीक्षा की गई है। पी.एन. लखनपाल की "Ghalib: Man his verses" (1960) में मिर्ज़ा की चुनी हुई ग़जलों एवं शेरों का अंग्रेज़ी अनुवाद है। एच.पी. सारस्वत की "Selection of Ghalib" में 112 शेर उर्दू लिपि में दिए गए हैं। साथ ही नीचे प्रत्येक अंग्रेज़ी काव्यानुवाद भी दिया गया है।

रोम से प्रकाशित अहमद ली की "Ghalib: Selected poems translated with an introduction" में ग़ालिब की शायरी के काव्यानुवाद सहज और बहुत ही सरल तरीके से दिये गये हैं। प्रणव बंधोपाध्याय की "Hundred Ghazals of Ghalib" में 100 ग़जलों का अंग्रेजी अनुवाद है। इस सबके अतिरिक्त बी.एन. रैना की Reina's Ghalib, के.सी. कॉडा की "Master pieces of Urdu Ghazals", उमेश जोशी की "786 Asha-Aar of Ghalib and 25 masters" काबिले ज़िक्र है।

1993 में लंदन 'हार्पर से प्रकाशित पुस्तक – The ightended heart: An Anthology of Sacred poetry" इस बात का सुबूत पेश करती है कि ग़ालिब की लोकप्रियता लगातार गुणात्मक होती रही है। इसमें ग़ालिब की 05 गज़लों का अंग्रेजी काव्यानुवाद दिया गया है।

'अंग्रेज़ी में ग़ालिब' संबंधी प्रस्तुत अध्ययन अपने आप में कतई पूर्ण नहीं हैं और इस विस्तृत विषय को छोटे से प्रयास की परिधि में समेटना 'मीना में सागर' भरने जैसा असम्भव होगा।

निःसंदेह इस सबके अतिरिक्त भी ग़ालिब की शायरी को समर्पित और भी कई महत्वपूर्ण पुस्तकें होंगी। अनेक अध्येताओं ने अपनी–अपनी सौंदर्यानुभूति के अनुसार ग़ालिब को समझने का प्रयत्न किया है। वाकई ग़ालिब एक ऐसे महान शायर थे जिन्होंने उर्दू–फारसी दोनों ज़बानों में लिखा और जिसने उसे पढ़ा वही ग़ालिब का दिवाना हो गया।

मिर्ज़ा ग़ालिब के कुछ शेरों के दो अलग–अलग अनुवादकों के अनुवाद दिलचस्प बानगी के तौर पर प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

बाज़ीचा–ए–अत्लाफ़ है दुनिया मिरे आगे

होता है शब–ओ–रोज़ तमाशा मिरे आगे।

इक खेल है औरंग–एसुलेमाॅ मिरे नज़दीक
इक बात है ऐजाज़–ए–मसीहा मिरे आगे।

The world is but a game that children play before my eyes
A spectacle that passes night and day day before my eyes.

The throne of Suleman is but a toy in my esteem
The micracle that is a worked, a trife in my eyes.
-Ralph Russel.
The world is as chidren's playfull fun to me;
Night and day this show is performed before me.
The thrown of Sooman is but a pastinate for me
The micracle of the messiab is a valueless trifle before me.
– एवान–ए–गालिब स्मारिका

दिल ही तो है न संग–ओ–ख़िश्त दर्द से भर न आए क्यूँ?
रोयेंगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताए क्यूँ?

It's afterall a heart, nor brik or stone
Why should'nt it fill with pain?
–बी.एन. रैना
ग़ालिब–ए–ख़ता के बग़ैर कोन से काम बंद हैं
रोइये ज़ार–ज़ार क्या, कीजिए हाय–हाय क्यूँ?
What work has stopped
Without Ghalib the distressful?
–पवन के. वर्मा
Sans the helpless Ghalib, what wheels of life are stopped?
So shed torrents of tears why, or why bewail him so?
– उमेश जोशी

स्व. शमशाद ख़ाँन
वरि. राजभाषा सहायक
कारखाना कोटा

भगवान बिरसा मुंडा

भगवान बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को राँची जिले की उलिहतु गाँव में हुआ था। भगवान बिरसा मुंडा का नाम मुंडा रीति–रिवाज के अनुसार बृहस्पतिवार के आधार पर बिरसा रखा गया था। भगवान बिरसा मुंडा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था।

भगवान बिरसा का परिवार रोजगार की तलाश में इनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरूमब्दा आकर बस गया। बाद में काम की तलाश में इनका परिवार बम्बा चला गया। भगवान बिरसा मुंडा का परिवार रोजगार की तलाश में घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करता रहा। भगवान बिरसा मुंडा का अधिकांश बचपन चल्कड़ में बीता था।

भगवान बिरसा मुंडा बचपन में जंगल में भेड़ चराने जाते थे, जंगल में समय व्यतीत करने के लिए बांसुरी बजाया करते थे और कुछ दिनों में बांसुरी बजाने में उस्ताद हो गये थे। भगवान बिरसा मुंडा ने कद्दू से एक तार वाला वादक यंत्र तुलिया बनाया था, जिसे वे अक्सर बजाया करते थे। इनके जीवन के कुछ रोमांटिक पल अखारा गाँव में बीते थे।

पारिवारिक समस्याओं के कारण भगवान बिरसा मुंडा को उनके मामा के गाँव अयुभातु भेज दिया गया था। वहीं पर इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। पढ़ाई में बहुत होशियार थे। स्कूल संचालक श्री जयपाल नाग इनसे बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने जर्मन मिशनरी स्कूल में दाखिला करा दिया।

उस समय क्रिश्चियन मिशनरी स्कूलों में प्रवेश लेने के लिए ईसाई धर्म अपनाना जरूरी हुआ करता था। प्रवेश के समय इनका नाम बिरसा डेविड रख लिया जो कालान्तर में बिरसा दाऊद हो गया था।

01 अक्टूबर, 1894 को बिरसा मुंडा नौजवान नेता के रूप में आदिवासी लोगों का नेतृत्व किया तथा अपने मूल पारम्परिक आदिवासी धार्मिक व्यवस्था पर चलने के लिए उन्हें प्रेरित किया। उनकी सलाह–शिक्षाओं को लोग अपनाने लगे जिसके फलस्वरूप वे अन्य आदिवासी लोगों के लिए भी आशा की किरण बन गये। उन्होंने समस्त सभी मुंडा समाज

को संगठित करके अंग्रेजों से लगान माफी के लिए आंदोलन किया। उन्हें 1895 में गिरफ्तार कर हजारी बाग केन्द्रीय कारागार में डाल दिया गया वहाँ उन्होंने 2 साल कारावास में व्यतीत किये। इस दौरान उन्होंने आदिवासियों के मूल अधिकार जल, जंगल और जमीन के लिए अपना संघर्ष और तेज कर दिया। इसी मध्य इस परिक्षेत्र में भारी अकाल पड़ा। बिरसा और उनके अनुयायियों ने अकाल पीड़ित जनता की सहायता जारी रखी और इसी दौरान भगवान बिरसा मुंडा की भेंट स्वामी अनन्त पाण्डे से हुई इन्होंने बिरसा मुंडा को हिन्दू धर्म तथा महाभारत के पात्रों के विषय में बताया।

ऐसा कहा जाता है कि 1895 में कुछ ऐसी अलौकिक घटनाएं घटीं जिसके कारण लोग बिरसा मुंडा को भगवान का अवतार मानने लगे। लोगों में यह विश्वास दृढ हो गया कि भगवान बिरसा के सम्पर्क मात्र से ही रोग दूर हो जाते हैं। बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होकर उनको सुनने लगे। जिससे प्रेरित लोग होकर अंध विश्वासों, हिंसक और मादक पदार्थों से दूर रहने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि ईसाई धर्म स्वीकार करने वालों की संख्या घटने लगी और लोग अपने पुराने धर्म में लौटने लगे।

अपने छोटे से जीवन काल में मानवता के लिए इतने बड़े त्याग, मार्ग दर्शन तथा महान कार्यों के कारण ही उन्होंने महापुरूष का दर्जा पा लिया। इसके लिए लोग उन्हें धरती अंबा के नाम से पुकारने लगे और पूजने लगे। उनके प्रगतिशील विचारों के प्रभाव से मुंडा समाज में संगठित होने की चेतना जागी। पेड़ों, जंगलों, कंदराओं में भूखे–प्यासे रहकर अंग्रेजों के विरूद्ध अपने समाज में जन–जागृति की मशाल जलाने वाले बिरसा मुंडा में लोग सच्चे देश भक्त तथा उनके अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाले की छवि देखने लगे।

1897 से 1899 के बीच भगवान बिरसा मुंडा के अनुयायियों एवं अंग्रेज सिपाहियों के बीच वर्चस्व और अस्तित्व के लिए युद्ध होते रहे। भगवान बिरसा मुंडा के अनुयायियों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। 1897 में भगवान बिरसा मुंडा के अनुयायियों ने अपने परम्परागत हथियार तीर कमान से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोल दिया। 1898 में तांगा नदी के किनारे अंग्रेजी सेना से भारी भिड़न्त हुई जिसमें अंग्रेजी सेना हार गई। इसके बदले भगवान बिरसा मुंडा के अनुयायियों की बहुतायत संख्या में गिरफ्तारी हुई।

जनवरी 1900 डोमवाड़ी पहाड़ी पर भगवान बिरसा मुंडा एक जनसभा को सम्बोदित कर रहे थे, उसी दौरान अचानक अंग्रेजी सेना ने आक्रमण किया जिसमें बहुतायत संख्या में औरते औ बच्चे मारे गये थे। अंग्रेजों के षडयंत्र वी बिरसा मुंडा के विरूद्ध लगातार जारी रहे और 03 फरवरी 1900 को चक्रधर पुर से उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इन्होंने अपनी अन्तिम सांस 9 जून 1900 को रॉची कारागार में ली। यह घटना दर्दनाम के साथ–साथ विवादित भी है। ऐसा माना जाता है कि भगवान बिरसा मुंडा को अंग्रेजों द्वारा जहर देकर मारा गया था।

आजाद भारत में बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुंडा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

एम.एल मीना
सहायक कार्मिक अधिकारी
कारखाना कोटा

ग्रीन सप्लाई चैन–एक परिचय

सप्लाई चैन प्रबंधन (SCM) सर्व प्रथम 1950 में चर्चा में आया। Mass Production के दौरान उत्पाद निर्माता द्वारा उत्पाद की कीमत नियमित रूप से कम करने की प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी तो नैतिक एवं सामाजिक स्तर को अक्षुण रखने के लिए ग्रीन प्रैक्टिस अवेरनेस में अभिवृद्धि करना आवश्यक हो गया। इसलिए 1990 में सप्लाई चैन व प्राकृतिक वातावरण के बीच होने वाले प्रभाव के सामंजय हेतु ''ग्रीन'' शब्द को जोड़ा गया तथा इस सिस्टम को ''ग्रीन सप्लाई चैन प्रबंधन'' (GSCM) प्रणाली बनाया गया। जिसका मतलब है कि न सिर्फ हरियाली को बढ़ाया जाये परंतु वेस्टेज (जैसे रसायनिक हजार्डस, उत्र्जन ऊर्जा एवें सॉलिड वेस्ट आदि) को कम या हटाकर किया जाता है। जिससे पर्यावरण में प्रतिकुल प्रभाव की रिस्क तथा उत्पाद की कीमत को भी कम करने का सामंजस्य बनाया जा सके। मानवीय सरोकारों के प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध, हमारे कारख़ाने ने भी ग्रीन सप्लाई चैन को आत्मसात करते हुये ग्रीनको सर्टिफिकेट प्राप्त किया है।

माल डिब्बा मरम्मत करख़ाना द्वारा इस सिस्टम को नियमित रूप से बनाये रखने के लिए कारखाना परिसर को स्वच्छ एवं साफ–सुथरा बनाये रखना, परिर में रैन वॉटर हार्वेस्टिंग (RWH) प्लांट बनाना, टॉयलेटस को अपग्रेड करना, हरियाली को बढ़ाना, स्टेशनरी कम करते हुये शतप्रतिशत इंटरनेट (100% E-Procurement) सिस्टम अपनाना आदि कार्य किये गये है। इसे बनाए रखने के लिए संबन्धित प्रभावी मदों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः–

कर्मचारियों में जागृति लाना :–

पर्यावरण को जीवन के अनुकूल बनाये रखने के लिए तथा आईएसओ 14001 के नियमों को क्रियान्वित करने के लिए समय–समय पर सभी कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाता है। इसके लिए कर्मचारियों या शॉप/सेक्शन के बीच स्वच्छता प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, सफाई अभियान जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहन के लिए इनाम, प्रमाण पत्र या शील्ड इत्यादि प्रदान किया जाता है।

वेस्ट का उचित निस्तारण :–

कारखाने में रिपेयर या निर्माण के दौरान जेनरेट होने वाले वेस्ट का उचित निस्तारण करते हुये उत्पादकता बढ़ाना हमारा उद्देश्य है। उचित निस्तारण से हमे अधिक संचय, अधिशेष या अप्रचलित मदों के एकत्रित होने से छुटकारा मिलता है। कार्य के दौरान मदों को लाने ले जाने में सुविधा होती है। उचित मदों का उपयोग होता है, कार्य की गुणवत्ता, मोनिट्रिंग एवं आंकलन की सही गणना प्राप्त होती है। उपयोग किये गये मदों को रिसाइकल/रि–यूज करने या वेस्ट मदों का निबटन करने पर अधिक कीमत मिलती है जिससे उत्पाद / मरम्मत दर भी कम हो जाती है।

ग्रीन हाउस गैसों (GHG) की रोकथाम :–

1. ऐसी गैसें जो पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं उन्हें न्यूनतम स्तर पर लाया जाता है। इस हेतु एक किलोमीटर परिक्षेत्र में रहने वाले कर्मचारियों को कारखाने में कार्य हेतु पैदल आना, तीन किलोमीटर वालों को साईकिल तथा दस किलोमीटर वालों को मोटर साइकिल या चार पहिया वाहन से आने वो भी पूलिङ्ग सिस्टम से आने–जाने के लिए प्रेरित किया जाता है।
2. कर्मचारियों के द्वारा कार्य के दौरान उत्सर्जित गैस को कम करते हुये पर्यावरण के अनुकूल व प्राकृतिक स्त्रोतों का

संरक्षण किया जाता है। जैसे:– विद्युत ऊर्जा की एवज में अक्षय ऊर्जा, कोयले व डीए गैस की एवज में सीएनजी या एलपीजी गैस का अधिक से अधिक उपयोग करना, जो कि सस्ती एवं पर्यावरण के अनुकूल भी होती है।

कारख़ाना परिसर की कॉलोनियों में जागरूकता :–

कारख़ाना के आस पास स्कूलों / कॉलोनियों में ऊर्जा, पानी व बिजली बचाओं जैसे जागरूकता अभियानों के साथ विद्युत ऊर्जा की एवज में अक्षय ऊर्जा, कोयले की कम से कम खपत, साफ सफाई बनाये रखना, गंदे पानी का उचित निस्तारण, प्रति वर्ष पौधे लगाने का टार्गेट बनाना आदि पर्यावरणीय कार्यों के लिए प्रेरित करना हमारे कारख़ाने की जिम्मेदारी एवं उद्देश्य है। जिसे यहाँ का प्रबंधन पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न करता है।

स्थानीय आपूर्ति फ़र्मो में जागरूकता लाना :–

1. कारख़ाने के दस किलोमीटर परिसर की स्थानीय अनुमोदित वेंडर (Local Approved Vendors) को ग्रीन सप्लाई हेतु हजार्डस पैकिंग मदों का उपयोग नहीं करने, यदि आवश्यक हो तो डिग्रडेबल मदों की पैकिंग का उपयोग किये जाने के लिए अभियान आयोजित करते है।
2. मदों के क्रय आदेश के साथ जागरूकता हेतु एक पम्पलेट भी भेजा जाता है, जिसमें ग्रीन सप्लाई प्रक्रिया से संबन्धित दिशा निर्देश होते है। वेस्टेज (ऊर्जा खपत के दिशा निर्देश एवं कार्बन उत्सर्जन फुटप्रिंट आदि) की स्पष्ट जानकारी दी होती है।
3. ग्रीन पैरामीटर्स के अनुरूप कार्य करने वाली फ़र्मों के साथ प्रश्नोत्तरी प्रोग्राम आयोजित करना, अवेयरनेस हेतु पम्पलेट बांटना व प्रोत्साहन हेतु प्रमाण पत्र या शील्ड प्रदान करना व बड़ी फर्मों को ''ग्रीनको प्रमाण पत्र'' या आईओएस प्रमाण पत्र लेने हेतु प्रोत्साहित करना इत्यादि प्रयास किये जाते है।
4. फ़र्मों द्वारा लाये जाने वाले सामान की सप्लाई सीएनजी वाहनों से, बिना पेकिंग में कमी करवाने अथवा पेकिंग को वापस ले जाने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। यदि आपूर्ति मात्रा कम होने पर ट्रांसपोर्ट के दौरान पूल्लिंग सिस्टम अपनाने हेतु सुझाव दिया जाता है।
5. ग्रीन सप्लाई के सुझाव हेतु फर्मों के साथ वर्ष में कम से कम दो या अधिक मीटिंग लेना, जागरूकता प्रभाव की जांच हेतु फ़र्मों की आडिट करना, फीड बैक लेना आदि कार्यक्रमों को सतत जारी रखे जाते है।
6. वर्क्स कांट्रैक्ट के अंतर्गत पर्यावरण को बनाये रखने के लिए रेलवे बोर्ड स्तर पर 1% राशि के आवंटन का प्रावधान अनुमानित राशि में भी रखा जाता है। जिसकी अनुपालना स्थानीय फ़र्मों द्वारा की जाती है।

उपरोक्त सभी प्रावधानों को अपनाने का उद्देश्य यह है कि पर्यावरण को प्रभावित करने वाले करकों को निष्प्रभावी करते हुये दक्ष आपूर्ति (efficient supply) सुनिश्चित करना तथा कारख़ाने के आउटटर्न मे नियमित अभिवृद्धि करते रहना। जिससे कि ग्लोबल वार्मिंग की वर्तमान समस्या से निजात पाने की दिशा में भी सार्थक प्रयास किये जा सके।

तारा चन्द
एस.एस.ई./आईएसओ सेल
कारख़ाना कोटा

RFID टैग एवं उनका उपयोग

RFID टैग क्या है– RFID टैग से तात्पर्य Radio Frequency Identification टैग से है। यह डाटा को स्टोर करने का एक सस्ता एवं सुलभ साधन है। वर्तमान में इसका प्रयोग वाहनों की पहचान, जानवरों की पहचान, मशीन की पहचान, हाईवे पर टोल भुगतान (FASTAG), जहाजों की पहचान एवं अब भारतीय रेलवे में वैगनों और कोच की पहचान को डिजिटल रूप में रखने हेतु भी किया जा रहा है।

RFID टैग के मुख्यत: दो भाग होते है, इसमें एक चिप होता है जो डाटा को स्टोर रखता है और दूसरा पार्ट उसका एंटीना होता है जो डाटा को रिसीवर तक ट्रांसमिट करता है। अगर यह टैग रिसिवर तक निश्चित दुरी में आता है तो रिसिवर इसके अंदर की सूचना को पढ़ लेता है और सॉफ्टवेयर के मदद से उस सूचना का प्रयोग विभिन्न कार्य में किया जा सकता है।

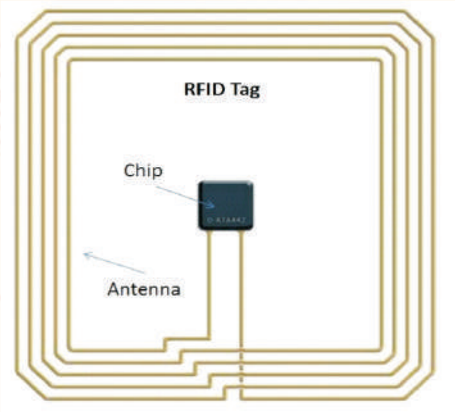

वर्तमान समय में नेशनल हाईवे पर सभी वाहनों में फ़ास्ट टैग अनिवार्य कर दिया गया है जो UHF (Ultra High Frequency) RFID टैग का ही एक रूप है। अगर फ़ास्ट टैग लगा वाहन उस हाईवे से गुजरेगा तो रिसिवर की मदद से वाहन की पहचान हो जाएगी और उस टैग से जुड़े हुए वॉलेट से एक निश्चित रकम काट ली जाएगी। इस प्रकार टोल टेक्स का भुगतान अपने आप हो जायेगा। इस प्रणाली से टोल पर लगने वाली लम्बी लाइन, ईंधन की बर्बादी एवं मानवीय हस्तक्षेप कम होने से टोल वसूली में भ्रष्टाचार एवं अनावश्यक वाद विवाद में कमी आने की संभावना है।

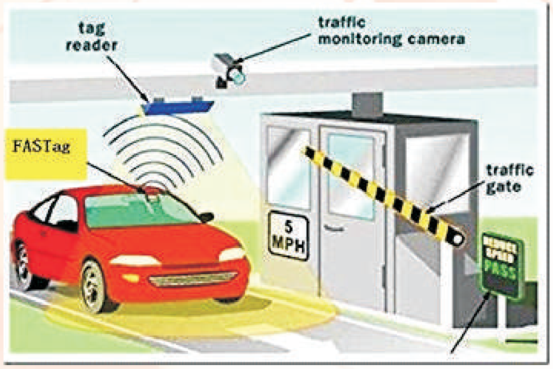

वर्तमान समय में भारतीय रेलवे भी अपने सभी कोच एवं वैगनो पर RFID TAG फिट कर रहा है। जिससे उस रोलिंग स्टॉक संबंधित सारी जानकारी जैसे उसका नंबर, रेलवे, रोलिंग स्टाक का प्रकार, POH दिनांक, निर्माता का विवरण, निर्माण वर्ष, अंतिम POH डिपो की जानकारी एवं अन्य कई दूसरे तरह के डाटा आवश्यकता अनुसार सुरक्षित रख

सकते है। जिससे रिसीवर द्वारा आसानी से इस डाटा को प्राप्त कर उसको सॉफ्टवेयर के मदद से उपयोग किया जा सकता है। किसी कारण वैगन या कोच के डिटेल अगर उस स्टॉक पर उपलब्ध न हो तो इस टैग के माध्यम से उस स्टॉक की पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।

दुनिया में बहुत से देशों में रेलवे के संचालन में RFID टैग का प्रयोग कर रहे है। इसकी मदद से रोलिंग स्टॉक की गणना, रोलिंग स्टाक का मूवमेंट, लोकेशन, होल्डिंग, रेलवे डिपो या रिपेयर वर्कशॉप में पड़े स्टॉक की जानकारी, हॉट बाक्स डिटेक्टर अथवा अन्य आटोमेटिक ब्रेक डाउन अलार्म सिस्टम द्वारा स्टाक की सही जानकारी आदि को आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इन सभी सूचनाओं की उपलब्धता से भारतीय रेलवे अपने रोलिंग स्टॉक एसेट का बेहतर प्रबन्धन कर पायेगा है।

भारतीय रेलवे द्वारा निर्माण के समय सभी नये कोच एवं वैगनों पर RFID टैग को लगाया जा रहा है। पुराने वैगनों में भी RFID टैग के फिटमेंट का कार्य भारतीय रेलवे द्वारा शुरू किया जा चुका है। COFMOW द्वारा प्रथम फेज में 80 हजार वैगनों पर टैग फिटमेंट का कार्य जा रहा है। दूसरे फेज में लगभग समस्त वैगनों पर RFID टैग के फिटमेंट का कार्य करना प्रस्तावित है।

सोनू कुमार मिश्रा
एस.एस.ई./योजना
कारख़ाना कोटा

स्वास्थ्य, खुशी, सफलता

1. रेल्वे क्या है? इस सवाल का जवाब रेल कर्मचारी के लिये अलग–2 हो सकता है क्योंकि रेल्वे के विभिन्न विभागों के अनुसार सबके कार्य अलग–2 होते हैं परन्तु एक रेल यात्री के लिये इसका एक ही जवाब होता है रेल यात्रा सच्चाई के क्षण वह होते है जब एक व्यक्ति अपने अनुभव को सच्चे शब्दों में व्यक्त करता है अर्थात सही को सही और बुरे को बुरा। इसी से रेल्वे के बारे में पता चलता है कि जनता में रेल्वे की छवि कैसी है। सच्चाई के क्षणों को जाने से ही रेल्वे में सुधार की संभावनाओं का पता चलता है। किसी भी संगठन को अच्छा बनाने के लिये सच्चाई के क्षणों को जानकर उसके कर्मचारियों का स्वास्थ्य एवं उनकी खुशी आवश्यक है।
2. रेल्वे की छवि को सुधार रखने के लिये स्वास्थ्य, खुशी, सफल कर्मचारी होने चाहिए जिसके लिए धरातल पर कार्य किया जाना जरूरी है।
3. व्यवहार कुशलता व्यक्ति का आभूषण है और इससे संबंध प्रगाढ़ होते हैं प्रसन्नता में वृद्धि होती है और कार्य की उत्पादकता बढ़ती है।
4. लगातार क्लेश और समस्याओं में बने रहने से सकारात्मक ऊर्जा खत्म होती है और नकारात्मक ऊर्जा बढ़ने से व्यक्ति बी.पी. शुगर और अवसाद जैसी बीमारियों से घिर जाता है।
5. अच्छे रिश्ते रखने के लिये सामने वाले को उन बातों को नजर अन्दाज करना पड़ता है जो आपको अच्छी नहीं लगती है।
6. लोगों के साथ व्यवहार बिना शर्तों से होने चाहिये। आस पास के लोगों से पैसा और समय शेयर करें।
7. सफलता का मतलब है दैनिक जीवन में आने वाले काम को करना जैसे घर, ऑफिस, समाज एवं देश के अनुसार अलग होते है कुछ आप स्वयं करते हो और कुछ पर आश्रित रहते है।
8. खुशी के वातावरण में काम अच्छे से होते है और क्लेश के वातावरण में नहीं होते है।
9. कार्य स्थल पर हमारा व्यवहार नियमों से बंधा होता है इसलिए इनका पालन खुशी से करना चाहिये। इसमें हमारा और रेल्वे का फायदा है। कई बार यह काम सज़ा की तरह लगता है लेकिन लम्बे समय में इसके अच्छे परिणाम आते है और आपको इस पर गर्व होगा।
10. रेल्वे की छवि को सुधारने में हमारा व्यक्तिगत सहयोग होना चाहिऐ।
11. स्वास्थ्य, खुशी, सफलता के लिए वातावरण तैयार करनार चाहिऐ।
12. समय समय पर सबके विचार लिऐ जाने चाहिऐ।
13. अपनी मान्यताओं को दूसरे पर थोपना मानवता पर सबसे बड़ा अत्याचार रहा है। इतिहास गवाह है इस छोटी सी बात पर बड़ी–बड़ी लड़ाई लड़ी गयी है। रेल्वे के परिप्रेक्ष्य में इंचार्ज की मान्यताऐं ही सब कुछ होती है। यह बात आउटर्न निकालने तक तो ठीक है लेकिन अच्छे समाज के निर्माण में बड़ी बाधक है। यही कारण है कि दुनियां में तकनीकी उन्नति होते हुऐ भी सामाजिक पतन हुआ है। व्यक्ति अपने स्वार्थ पूर्ति के परिवर्तन तो तुरंत स्वीकार कर लेता है लेकिन समाज परिवर्तन पर अपनी मान्यताओं का रोड़ा अटकाता है मान्यताओं और नियमों में तालमेल के अन्तर को व्यक्ति अपनी स्वार्थ पूर्ति में दुरूपयोग करता है जिससे सामाजिक असन्तोष बना रहता है। दूसरे की मान्यताओं का अपमान नहीं करके भी हम सामाजिक सामंजस्य बिठा सकते हैं। अपनी मान्यताओं की खातिर दूसरे की मान्यताओं का अपमान करना विद्वेश उत्पन्न करता है। अतः लोकतंत्र में समान मान्यताओं पर आधारित समाज निर्माण की आवश्यकता है। अर्थात् स्वास्थ्य, खुशी और सफलता के लिए रेल कर्मचारी को व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयास करना चाहिऐ।

राजेन्द्र सिंह राव
एस.एस.ई–बी.टी.सी
कारखाना कोटा

भारतीय रेल में हिन्दी पुस्तकालयों का महत्व एवं उपयोगिता

प्रस्तावना :– व्यक्ति के चरित्र निर्माण में पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

पुस्तकें जहां एकान्त में किसी शुभचिन्तक मित्र एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाती हैं वहीं हमारे व्यक्तित्व को भी संतुलित करती है। बाल्यकाल के साथ ही व्यक्ति पुस्तकों के महत्व को समझने लगता है। मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञान–प्राप्ति की लालसा उसे पुस्तकों तक खींच लाती है। यह बात भारतीय रेलवे में शत–प्रतिशत लागु होती है।

व्यक्ति यह समझने लगता है कि भोजन के साथ–साथ अच्छी पुस्तकें भी उसके लिए जरूरी हैं। पुस्तकों की सहज प्राप्ति हेतु वह पुस्तकालय तक जाता है। ज्ञानराशि का अक्षय भण्डार पुस्तकें उसे ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं एवं विधाओं से परिचित कराती हैं।

व्यक्ति भारतीय रेल में कभी हिन्दी पुस्तकालयों, व्यक्तिगत पुस्तकालयों तो कभी सार्वजनिक पुस्तकालयों के माध्यम से अपनी आवश्यकता की पूर्ति करता है। शिक्षा संस्थानों से सुलभ होने वाली पुस्तकों को भी वह पढ़कर अपने लक्ष्य प्राप्त की ओर अग्रसर होता है।

भारतीय रेल में हिन्दी पुस्तकालय :–

भारतीय रेलवे में पुस्तकालयों की बहुत बड़ी भूमिका है। रेलवे बोर्ड से लगाकर छोटे–छोटे इकाईयों तक में पुस्तकालय स्थापित किये गये हैं। जैसे रेलवे जोन मुख्यालयों, मंडल स्तर पर, कारखाना स्तर पर भी पुस्तकालयों की स्थापना की गई है।

रेलवे में पुस्तकालयों से कर्मचारियों को हर प्रकार की पुस्तकें पढ़ने का मौका मिलता है। वह भी बिल्कुल मुफ्त में जिसका कोई शुल्क नहीं होता है। यह सेवा बिल्कुल निःशुल्क भारतीय रेलवे द्वारा उपलब्ध करवाई जाती है।

भारतीय रेलवे में पुस्तकालयों पर विभिन्न प्रकार की तकनीकी गैर–तकनीकी पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकालयों में आप बैठकर विभिन्न प्रकार की पत्र–पत्रिकाएं, मेगजिन प्रतियोगिता दर्पण, रोजगार समाचार, नवाचार आदि को बिना समय बर्बाद किये हुए ही बिल्कुल निःशुल्क आप ज्ञानार्जन कर सकते हैं।

भारतीय रेल में कर्मचारियों का पुस्तकालयों के द्वारा नवाचार बढ़ाया जाता है। वर्तमान में क्या आविष्कार हुआ एवं क्या नई तकनीकी आविष्कार हुई उसको अपडेट करने के लिए पुस्तकालयों की स्थापना रेल के द्वारा की गई हैं।

रेल कर्मचारियों को बिना समय खर्च किये सुव्यवस्थित पुस्तकालयों में किसी भी तरह की पुस्तक को पुस्तकालयाध्यक्ष से इस्यू करवाकर आप घर में बैठ कर भी ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं। जैसे स्कूलों कॉलेजों, विश्व–विद्यालय स्तर पर पुस्तकालयों की स्थापना की जाती है वैसे ही रेल प्रशासन द्वारा अपने कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन के लिए भी यह सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है।

भारतीय रेल एवं हिन्दी :–

भारत वैसे ही हिन्दी भाषा प्रधान देश रहा है। जब से भारत ने राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया है तब से ही

हिन्दी का महत्व और भी बढ़ गया है। हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए रेल कर्मचारियों को हिन्दी के प्रचार–प्रसार करने के लिए पुरस्कार भी प्रदान किये जाते है।

भारतीय रेलवे में हिन्दी का अनिवार्य रूप से प्रयोग करने के लिए कटिबद्धा है। हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के लिए जगह–जगह पुस्तकालयों की स्थापना की गई है। स्टेशनों में उद्घोषणा भी स्थानीय भाषा, हिन्दी भाषा एवं अंग्रेजी भाषा को अनिवार्य रूप से बोलने की व्यवस्था की गई है।

भारतीय रेल के हाथ हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के लिए पुस्तकालयों में नित नई पत्र–पत्रिकाएं, रेल पत्रिका, राजभाषा पत्रिका, राजभाषा सरिता, प्रयास, चंपक, प्रतियोगिता दर्पण इत्यादि पुस्तकों पत्रिकाओं का संग्रह रेल कर्मचारियों के लिए किया जाता है।

पुस्तकालयों की उपयोगिता एवं आवश्यकता :–

पुस्तकालय चाहे शैक्षिक संस्थानों का हो या फिर रेल संस्थान ओर सार्वजनिक स्थानों का उसका महत्व एवं उपयोगिता तो है ही। हमारा देश भारत प्राचीनकाल से पुस्तकालयों का भण्डार रहा है। पुस्तकालय विषयक उसकी समृद्धि नालन्दा, तक्षशिला, विकृमशिला, ओदन्त पुरी आदि विद्यालयों के माध्यम से भी मिलती है।

भारतीय रेल पुस्तकालयों के अलावा हमारे देश में वर्तमान में राष्ट्रीय पुस्तकालय भी हैं जहाँ प्राचीन के ऐतिहासिक दस्तावेजों सहित पान्डुलिपियॉ संगृहीत हैं। कलकत्ता, दिल्ली, मुम्बई, बड़ौदा के राष्ट्रीय एवं राजकीय पुस्तकालयों में पुस्तकों का अक्षय भण्डार है, जिनका अध्ययन कर धनी, दरिद्र, बाल, वृद्ध, युवा सभी लाभान्वित होते हैं।

भारतीय रेल में ज्ञान वृद्धि एवं ज्ञान प्रकाश के स्थायी केन्द्रों के रूप में पुस्तकालयों की महत्ता एवं उपयोगिता अक्षुण है। पुस्तकालय न केवल हमारी ज्ञान–पिपासा को शान्त करते है वरन हमारे व्यक्तित्व का निर्माण भी करते हैं। पुस्तकालय में जाकर जब हम महान पुरूषों, मनीषियों, कलाकारों, वैज्ञानिकों, राष्ट्रभक्तों के आदर्श एवं प्रेरणापरक चरित्र को पढ़ते है, तो हम उनसे प्रेरणा लेते हैं।

भारतीय रेलवे द्वारा स्थापित पुस्तकालयों से हमारा बौद्धिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक विकास भी होता है। समय के सदुपयोग एवं मनोरंजन के साधनों के रूप में पुस्तकालय की हमारे जीवन में काफी उपयोगिता है। पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से हमें देश–विदेश के समाचार मिलते है, वही हमारी आन्तरिक वृत्तियों का शोधन परिष्क करण भी होता है।

भारतीय रेलवे में पुस्तकें विश्व बंधुत्व, मैत्री, सदभावना की भावना जगाने के साथ–साथ विश्व की सभ्यता, संस्कृति, साहित्य से भी परिचित कराती है। पुस्तकालयों की महत्ता एवं उपयोगिता को जानकर ही हमारे देश के नगर, महानगर, गाँव–गाँव में भी पुस्तकालय की व्यवस्था का प्रयास सरकार द्वारा किया जाता रहा है।

पुस्तकालयों का महत्व :–

भारतीय रेल में पुस्तकालयों का महत्व है वैसे ही सामान्य सृष्टि के समस्त चराचरों में मनुष्य ही सर्वोत्कृष्ट कहलाने का गौरव प्रापत करता है। मनुष्य ही चिंतन–मनन कर सकता है। अच्छे बुरे का निर्णय कर सकता है तथा अपने छोटे से जीवन में बहुत कुछ सीखना चाहता है।

उसी जिज्ञासावृत पुस्तकें शांत करती हैं अर्थात ज्ञान का भण्डार पुस्तकों में समाहित है। ऐसा स्थान जहाँ अनेक पुस्तकों को संग्रहित करके उनका एक विशाल भण्डार बनाया जाता है पुस्तकालय कहलाता है। पुस्तकालय ज्ञापन के वे मंदिर हैं जो मानव इच्छाओं का शांत करते हैं। उसे विभिन्न विषयों पर नई जानकारियाँ उपलब्ध हैं ज्ञान के संचित कोष से उसे निश्चित करते हैं। अतीत के झरोखों की झलक दिखाते है तथा उसके बौद्धिक स्तर का विकास करते हैं।

भारतीय रेल में विषय अनंत हैं उन विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें अनन्त है। उन सभी पुस्तकों की खरीद कर पढ़ पाना किसी के बस की बात नहीं हैं। इस आवश्यकता की पूर्ति पुस्तकालय अत्यन्त सुगमता से कर सकता है। बड़े–बड़े पुस्तकालयों में लाखों पुस्तकें संगृहित होती है।

भारतीय रेल पुस्तकालयों इनमें वे दुर्लभ पुस्तकें भी होती है जो अब अपाप्य है जिन्हें किसी भी कीमत पर खरीदा नहीं जा सकता है। पुस्तकालय में बैठकर कोई भी व्यक्ति एक ही विषय पर अनेक व्यक्तियों के विचारों से परिचित हो सकता है। अन्य विषयों के साथ अपने विषय का तुलनात्मक अध्ययन भी कर सकता है।

भारतीय रेल में अनगिनत पुस्तकों वाले अधिकांश पुस्तकालय पूरी तरह व्यस्थित होते है। विद्यार्थी कुछ देर में ही अपनी जरूरत की पुस्तक पा सकता है। पुस्तकालयों में जाते समय उनके नियमों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। वहाँ जाकर वही पुस्तकें पढ़नी चाहिए जिनकी आपको जरूरत हो। पुस्तकालय में केवल किस्से कहानियाँ की पुस्तकें पढ़कर अपना समय बरबाद करने के लिए जाते है तो सदुपयोग करना चाहिए तथा पुस्तकालय में बैठकर शान्त वातावरण में एकाग्रचित्त होकर अध्ययन करना चाहिए।

पुस्तकालयों में बैठकर पुस्तकें पढ़ते समय बिल्कुल शान्त रहना चाहिए। पुस्तकालय की पुस्तकों पर पेंसिल या पेन से निशान लगाना उनके चित्रों आदि को फाडकर या गंदा करना ठीक नहीं है।

अपने प्रिय महापुरूष, राजनेता, कवि, साहित्यकार आदि के जीवन और विचारों से कोई व्यक्ति सहज ही साक्षात्कार संभव हो जाता है। पुस्तकालय ज्ञान–विज्ञान के अनन्त भण्डार होते है। उन्हें अपने भीतर समाए करने वाला अनन्त नदी–धारों, विचारों–रत्नों, भाव, विचार प्राणियों का अनन्त सागर एवं निधि कहा जाता है।

जैसे अनन्त नदियों का प्रवाह नित्य प्रति सागर में मिलते रहकर उसे भरित बनाए रखते है वेसे ही नित्य नई–नई पुस्तकें भी प्रकाशित होकर पुस्तकालयों को भरा–पूरा किए रहती है। यही उनका महत्व एवं गौरव है।

उपसंहार :–

भारतीय रेलवे में पुस्तकालयों की महत्ता, उपयोगिता एवं उसकी आवश्यकता अक्षुण है।

व्यक्तित्व निर्माण, ज्ञान–पिपासा की शान्ति, मनोरंजन चित्तवृत्तियों का परिष्कार पुस्तकों द्वारा ही होता है। पुस्तकों के बिना तो मानव जीवन अधूरा ही होगा। पुस्तकें व्यक्तित्व निर्माण के साथ–साथ परिवार, समाज, देश की उन्नति में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हे। जिस देश का नागरिक सुशिक्षित ज्ञान सम्पन्न होगा, वह देश निश्चित ही उन्नति की चरम सीमा को प्राप्त करेगा।

स्व. शमशाद ख़ॉन
वरि. राजभाषा सहायक
माल डिब्बा कारख़ाना, कोटा

कारखाना कोटा : एक परिचय

1. मील का पत्थर : वैगन रिपेयर कोटा की नीव नवम्बर, 1957 में रखी गई थी और वर्कशॉप माह अक्टूबर–1960 में प्रारम्भ की गई थी। वर्कशॉप को मूलरूप से 4 व्हीलर वैक्यूम ब्रेक वैगनों को हेंडल करने के लिए डिजाइन किया गया था।

स्थापना के बाद से वर्कशॉप ने सभी प्रकार तकनीकी प्रगति और चुनौतियों को स्वीकार किया है और वर्तमान में वर्कशॉप में बिना किसी बुनियादी ढांचे में परिवर्तन किए, जो 4– व्हीलर वैक्यूम ब्रेक स्टॉक को हेंडल करने के लिए डिजाइन किया गया था उकी बुनियादी ढांचे पर सभी प्रकार के 8–व्हीलर एकर ब्रेक वैगनों को हैंडल किया जा रहा है। सन् 1989 में एयर ब्रेक सिस्टम को चालू करने के बाद कोटा वर्कशॉप का पुनर्गठन किया गया। डस्ट फ्रूफ एयर कंडीशन शेड एकर ब्रैक लैब, डस्ट प्रूफ वातानुकूलित सीटीआरबी सेक्शन मैनीपुलेटर युक्त केसनब बोगी सेक्शन, फिक्सर्स, क्लीनिंग प्लांट गुणवत्ता और अच्छी कारीगरी के लिए स्थापित किए गए है। प्रारम्भ से ही वैगन रिपेयर शॉप कोटा पश्चिम मध्य रेलवे का हिस्सा था। जून 2004 में यह पश्चिम मध्य रेलवे के अन्तर्गत आ गया।

वर्कशॉप को भारतीय रेलवे में BTPGLN (LPG) वैगनों को सम्भालने वाला एक मात्र कारखाना होने का गौरव प्राप्त है। कारखाना अब स्टेनलेस स्टीन वैगनों (BCNHL और BOXNHL) के पीओएच को आगे बढ़ाने के लिए एक ओर तकनीकी की प्रगति के लिए एक ओर कदम आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहा है। प्रारम्भ में पीओएच आउट–टर्न 250 –4व्हीलर यूनिट थी जो वर्ष 2022–23 में उत्तरोत्तर बढ़कर 500 व्हीकल यूनिट हो गई है।

2. प्रमुख गतिविधियां :

i. बॉक्सन के पीओएच, आरओएच, एनपीओएच, बीएलसी, बीसीएन/ बीसीएनए, बीटीपीएन, बीआरएन, बीवीजेडसी, विभागीय वैगन एवं मिलिटरी वैगन।

ii. एलपीजी वैगनों का पीओएच– भारतीय रेलवे में एक अनूठी विशेषता:– कोटा वर्कशॉप एक मात्र ऐसी वर्कशॉप है जिसे भारतीय रेल के सभी एलपीजी वैगनो को पीओएच करने हेतु नामित किया गया है।

iii. 4– व्हीलर टॉवर वैगनों का पीओएच अप्रैल–2004 से प.म.रे. के टॉवर वैगनों का पीओएच प्रारम्भ किया गया।

iv. बीवीजेडआई वैगनों का पीओएच– फरवरी–2009 से बीवीजेडआई वैगनों का पीओएच प्रारम्भ किया गया था।

v. आर.एस.पी. कार्य– आईआरएसएम–44 स्टील का प्रयोग कर बॉक्सएन वैगनों का उन्नयन एवं बहाल करना। बॉक्सएन का बॉक्सएनएचएएम में परिवर्तन, फ्रेट स्टॉक (बॉक्सएन, बॉक्सएनएचएल, बीसीएन, बीसीएनए, बीआरएनए/बीआरएन, बीओएसटी, बीटीपीएन, बीवीजेडसी और बीवीजेडआई) के ट्विन पाइप एयर ब्रेक सिस्टम में रीट्रोफिटमेंट द्वारा बॉक्सएन का बॉक्सएनएचएएम में रूपान्तरण करना और बीसीएनएचएल वैगनों का आधुनिकीकरण करके इन्हें सुरक्षित और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाना।

vi पहिये की मरम्मत/ व्हील रिपेयर– इस वर्कशॉप का पहिया अनुभाग सभी प्रकार के बी.जी. पहिया सेटो जैसे कि–22.9 टन बॉक्सएन/बीएलसी, आरबी 16.3 टन और 20.3 टन का प्रबंध करती है। वर्कशॉप डी/री. एक्सिलिंग इत्यादि सहित प्रतिमाह 2764 पहियों को टेकिल करने में सक्षम है। एयर ब्रेक स्टॉक पर उपयोग

में लाए जाने वाले परिष्कृत सीटी आर बी को धूल मुक्त नियंत्रित वातावरण में प्रशिक्षित कर्मचारियों द्वारा ओवरहाल किया जाता है।

3. मुख्य विशेषतायें :

- आज का का घोषित आउटटर्न 500 यूनिट/माह
- वर्तमान कार्यबल 1961
- अधिगृहित क्षेत्र 447840 व.मी.
- कुल कवर क्षेत्र 57690 व.मी.
- हरित क्षेत्र 40 प्रतिशत
- कुल ट्रैक की लंबाई 18 कि.मी.
- कुल मशीन और प्लांट 481 नग
- बिजली की खपत 1.36 लाख यूनिट/माह (औसत)
- सोलर बिजली की खपत 53541 यूनिट/माह (औसत)
- पेयजल खपत 3500 कि.ली./माह
- कच्चे पानी खपत 5850 कि.ली./माह
- पीओएच लागत 3.32 लाख

4. उत्कृष्ट कार्य :

(i) लक्ष्य और मासिक औसत आउटटर्न :–

वर्ष लक्ष्य	आउट–टर्न	वृद्धि
2015–16 450	464	3.09 प्रतिशत
2016–17 460	487	5.87 प्रतिशत
2017–18 475	500	5.26 प्रतिशत
2018–19 500	500.7	0.14 प्रतिशत
2019–20 500	491	
2020–21 477	479.25	0.47 प्रतिशत
2021–22 500	517.58	3.51 प्रतिशत
2022–23 500 (फर. 23)	530.64	6.12 प्रतिशत

(ii) बी.एल.सी. वैगनों का हायर एक्सल लोड मॉडिफिकेशन :– निजी परिचालन से सम्बन्धित 70 बी.एल.सी. वैगनों का मॉडिफिकेशन करके कोटा वर्कशॉप द्वारा वर्ष 2021–2022 के दौरान 18.43 लाख का राजस्व अर्जित किया गया था। वर्ष 2022–23 में भी 135 बी.एल.सी. वैगन मॉडिफाइड किये गये है। इनसे 41 लाख का राजस्व अर्जित किया गया।

(iii) बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली का कार्यान्वयन :– सितंबर–19 माह से कोटा कारखाने की सभी पालियों

में कारखाने के समस्त कर्मचारियों के लिये बायोमेट्रिक गेट उपस्थिति प्रणाली लागू की गई।

(iv) अनुरक्षण प्रक्रिया हेतु उत्कृष्टता केंद्र :–

(अ) **व्हील शॉप, उत्कृष्टता का केंद्र के रूप में :–** कारखाने की व्हील शॉप कच्चे माल, डब्ल्यूआईपी और तैयार पहियों के 100 प्रतिशत अलगाव वाली 5–एस प्रमाणित शॉप है यू.एस.टी. (अल्ट्रासोनिक टेस्टिंग) की गुणवत्ता बहुत उच्च है। जनवरी–2017 से अत्याधुनिक मोडिफाइड मशीनों द्वारा 100 प्रतिशत यू.एस.टी. स्वरूपों को सम्भालकर इन्हें डेस्क टॉप की हार्ड ड्राइव में स्थानान्तरित किया जा रहा है।

वस्तुत: डब्ल्यूआरएस यूएसटी परीक्षण किए गए एक्सेल में पिछले 15 वर्षों से कोई विफलता (कोल्ड ब्रेकेज) नही हुई है। टायर टर्निंग के लिए सीएनसी मशीन, एक्सल टर्निंग, व्हील प्रेसिंग का उपयोग उच्च स्तरीय गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है। माइक्रोमीटर रीडिंग तीन दशमलव अंको तक दर्ज की जाती है। मानक खुरदरापन तुलनित्र का उपयोग करके वास्तविक समय के आधार पर मेकेनाइज्ड एक्सल/व्हील का सतही मिलान किया जा रहा है। (एजेटीबी पर) ब्लू मैचिंग के द्वारा जनरल अपसैट (बिल्डअप) का पूर्णत: उन्मूलन सुनिश्चित किया गया है। व्हील शॉप कोटा में सभी आवश्यक मापने वाले उपकरण, गेज उपकरण और उच्च गुणवत्ता एवं परिशुद्धता के है। सभी आवश्यक तकनीकी अनुदेश (मैन्युअल कोड और ड्राइंग) उपलब्ध है। हम अच्छी गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण को सुनिश्चित करते हैं और सभी फील्ड स्टॉफ के लिए तैयार संदर्भ हेतु प्रदर्शित किए गए है। कोटा वर्कशॉप द्वारा व्हील डिस्क प्रेस्ड में पिछले 15 सालों से व्हील डिस्क के शिफ्ट नहीं होने का कोई मामला प्रकाश में नहीं आया है। फरवरी–2017 के बाद सभी प्रेस्ड व्हील के ग्राफ की हार्ड कॉपी को रिकार्ड में रखा गया है। हम नियमित रूप से हाउसकीपिंग के उच्च मानकों को अक्षुण बनाए हुये है। यह ग्रीनको के अनुरूप शॉप है।

(v) अग्निशमन मोबाईल टैंक :– कार्यरत/ पुराने अग्निशमन ट्रक/वैन के पुराने हो जाने के कारण (1985 निर्मित) इसका अनुरक्षण करना बहुत कठिन है। बाजार में इसके कल–पुर्जे भी प्राप्त नहीं होते है। अत: उच्च क्षमता वाले टैंक की एक वैकल्पिक व्यवस्था करने का निर्णय किया गया, जिसे ट्रेक्टर द्वारा खींचा जा सकता है। तदनुसार 5 किलोलीटर क्षमता का एक टैंक उपलब्ध कराया गया तथा इसमें एक 5.5 एच.पी. वाटर पंप लगा दिया गया। यह एक प्रभावी और अग्निशमन ट्रकों का सस्ता रिप्लेसमेन्ट है। इसे वर्कशॉप में कही भी ले जाया जा सकता है।

(vi) मेग्नेटिक स्वीपर :– कारखाने में छोटे लोह स्क्रेप की समस्या लगातार बनी हुई थी। लोह स्क्रेप के लोट बनाने तथा लगातार सफाई के बावजूद भी शॉपों में स्क्रेप बना रहता था इस समस्या का निराकरण मेग्नेटिक स्वीपर नामक प्रोडक्ट उपलब्ध कराके किया गया है इसके द्वारा शॉप फ्लोर से सभी लोह स्क्रेप पकड़ लिया जाता है जिसे वर्कशॉप के लोह स्क्रेप में जमा कर दिया जाता है।

(vii) वेल्डिंग प्रशिक्षण के लिए मॉडल रूम :– बाक्सएन वैगनों की वेल्डिंग प्रक्रिया का एक मानदण्ड स्थापित करने के इरादे से वेल्डिंग मॉडल कक्ष नाम से कोटा वर्कशॉप के बी.टी.सी. अनुभाग में एक वेल्डिंग मॉडल गैलरी का निर्माण किया गया है। इस कक्ष में स्क्रेप बॉक्सएन वैगनों से बने सभी प्रकार के वेल्ड

सीम के नमूने रखे गए है। इसके माध्यम से वेल्डर स्थापित बेंचमार्क के साथ अपने वेल्डिंग की गुणवत्ता का आंकलन कर सकते है। इस कक्ष में सेंटर सिल वेल्डिंग, बीटीपीएन बेरल दरार की मरम्मत जैसे महत्वपूर्ण वेल्डिंग प्रक्रियाओं के ऑडियो विडियो चलाने की सुविधा भी है। वह हमारे वेल्डरो के लिए एक प्रेक्टीकल लर्निंग टूल की तरह से उपयोगी होगा।

(viii) शंटिंग एंड प्लेसमेंट बुक :– यांत्रिक विभाग में भर्ती नये ग्रुप–डी वाले कमचारियों को प्रारम्भ में अभ्यास के रूप में यार्ड शॉप में पदस्थ किया जाता है। उन्हें ट्रेवर्सर शंटिंग पर प्रशिक्षण दिया जाता है और शीघ्र ही कार्य पर रख लिया जाता है। इस प्रकार ग्रुप–डी की नयी भर्ती वाल कर्मचारियों के लिए कोई प्रभावी प्रशिक्षण नहीं है। अतः इस प्रकार के कर्मचारियों के लिए एक व्यापक पठन ह प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने का निश्चय किया गया। इस खोज में वर्कशॉप कोटा द्वारा शंटिंग एन्ड प्लेसमेन्ट शीर्षक से एक पुस्तक तैचार की गई जिसमें अन्य बातों के साथ साथ स्टाफ की ड्यूटी, शंटिंग प्रक्रिया तथा कुछ सामान्य एवं सहा.नि. का सार सम्मिलित है इस पुस्तिका में गत वर्षों में हुए यार्ड की कुछ दुर्घटनाओं को सम्मिलित किया गया है जो कि प्रशिक्षण टूल की तरह नये भर्ती कर्मचारियों की मदद करेगी।

(ix) ऊर्जा बचत :– वेल्डिंग मशीनों की आइडलिंग के दौरान व्यय होने वाली ऊर्जा को बचाया जा सकता है। इसके समाधान में यह तय किया गया कि मौजूदा वेल्डिंग मशीनों में एनर्जी सेवर स्विच लगाये जाये जिससे आइडलिंग के दौरान वेल्डिंग मशीन स्वतः बंद हो जाएगी और इस प्रकार बिजली की बचत की जा सकेगी। अब तक 50 नग एनर्जी सेवर लगाये जा चुके है। इन अतिरिक्त खर्चों की पेबेक अवधि लगभग 6 माह है।

(x) स्टेनलेस स्टील के दरवाजों को सीधा करना :– वैगनों की आवधिक ओवेरहौल के दौरान दरवाजे यदि मुडे हुये या क्षतिग्रस्त पाये जाते है तो इनके स्थान पर नये स्टेनलेस स्टील के दरवाजे लगाये जाते है। स्टेनलेस स्टील के दरवाजों को इनके अंतर्निहित गुणों के कारण गर्म करके सीधा नहीं किया जा सकता। जिन दरवाजों के फ्रेम मुड़े हुये होते है, कारखाने में ऐसे दरवाजों की मरम्मत करना प्रारम्भ किया है। BOXNHL, BCNHL, BCNA के दरवाजों को सीधा करने के लिये इन्हें दो पेकिंग पर रखा जाता है तथा मुड़े हुये भाग को दोनों पेकिंग के मध्य रखा जाता है तब इसे 100 टन हाइड्रोलिक प्रेस से दबाया जाता है। दरवाजे को वास्तविक सीधी स्थिति के थोड़ा पीछे की ओर 2 से 3 मिमी. के लिये दबाया जाता है ताकि दबाव बल को छोड़ने के बाद फ्रेम का प्रोफाइल प्राप्त किया जा सके और इसके बाद दबाव छोड़ दिया जाता है। यदि दरवाजा फिर भी थोड़ा टेड़ा रहता है तो फिर से वही प्रक्रिया जब तक दरवाजा सीधा न हो जाये अपनाई जाती है।

इस प्रकार से BOXNHL, BCNHL, BCNA वैगनों की आवधिक ओवेरहौल के दौरान पुराने मुड़े हुये दरवाजों को पुनः उपयोग में लाया जाता है इससे नये दरवाजों की लागत की बचत हो जाती है। अब तक इस प्रकार से BOXNHL, BCNHL, BCNA वैगनों के 80 दरवाजों की मरम्मत की गई है। एक नये दरवाजे की लागत 8928 रूपये है। इस प्रकार से 2.6 करोड़ रूपये की बचत हुई है।

(xi) महात्मा गाँधी के योगदान को दर्शाने वाले मॉडल बनाये गये है तथा इन्हें कारखाने के विभिन्न बगीचों में स्थापित किया गया है।

राजभाषा पुरस्कार योजनाएं

भारत सरकार की राजभाषा नीति मूलतः प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार पर आधारित नीति है। राजभाषा का प्रयोग सौहार्दपूर्ण परिवेश में तेजी से बढ़े इसके लिए पात्रता के आधार पर सभी केंद्रीय कर्मचारियों के लिए प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई है:–

क्र.	पुरस्कार का नाम	स्थान	पुरस्कारों की संख्या	पुरस्कार की राशि
1.	गृह मंत्रालय की 20/ 10 हजार या	प्रथम	दो	5000/–
	अधिक शब्द लेखन प्रतियोगिता	द्वितीय	तीन	3000/–
	क्षेत्रीय तथा मंडल स्तर पर	तृतीय	पांच	2000/–
2.	हिन्दी निबंध/वाक् आलेखन एवं	प्रथम	एक	2000/–
	टिप्पण प्रतियोगिता	द्वितीय	एक	4000/–
	क. अखिल भारतीय स्तर पर	तृतीय	एक	3000/–
		प्रेरणा	पांच	2500/–
	ख. क्षेत्रीय स्तर पर	प्रथम	एक	2000/–
		द्वितीय	एक	1600/–
		तृतीय	एक	1200/–
		प्रेरणा	तीन	800/–
3.	हिन्दी डिक्टेशन योजना			
		(1) हिन्दी भाषी 20000 शब्द रू. 5000/–		
		(2) अहिंदी भाषी 10000 शब्द रू. 5000/–		
4.	रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	एक	राजपत्रित 6000/–
	विषय – रेल संचालन और	द्वितीय	एक	राजपत्रित 4000/–
	प्रबंधन से संबंधित विषय	प्रथम	एक	अराजपत्रित 6000/–
		द्वितीय	एक	अराजपत्रित 4000/–
5.	कथा संग्रह एवं उपन्यास लेखन	प्रथम	एक	20000/–
	के लिए प्रेमचंद पुरस्कार	द्वितीय	एक	10000/–
		तृतीय	एक	7000/–
6.	काव्य संग्रह के लिए मैथिलीशरण	प्रथम	एक	20000/–
	गुप्त पुरस्कार	द्वितीय	एक	10000/–
		तृतीय	एक	7000/–
7.	हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु	प्रथम	एक	100000/–
		द्वितीय	एक	75000/–
		तृतीय	एक	60000/–
		प्रेरणा	एक	30000/–

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें कोई दो राय नहीं।
–जवाहर लाल नेहरू

8.	तकनीकी रेल नियमों पर	प्रथम	एक	20,000/–
	मोलिक पुस्तक लेखन के लिए	द्वितीय	एक	10,000/–
	लाल बहादुर शास्त्री पुरस्कार	तृतीय	एक	7000/–
9.	रेल यात्रा वृतांत पुरस्कार योजना	प्रथम	एक	10,000/–
		द्वितीय	एक	8,000/–
		तृतीय	एक	6000/–
		प्रेरणा	पांच	400/–
10.	सामूहिक पुरस्कार योजना	प्रथम	छह	12000/–
	(विभागों को दिया जाता है)	द्वितीय	पांच	8000/–
		तृतीय	पांच	6000/–
11.	राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना		हिंदी भाषी	हिंदीतर भाषी
	सरकारी संस्था की पत्र – पत्रिकाओं	प्रथम	20,000/–	25,000/–
	में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के	द्वितीय	18000/–	22,000/–
	लेखकों (रेल कर्मियों के लिए)	तृतीय	15000/–	20,000/–
12.	हिन्दी में ज्ञान विज्ञान मौलिक	प्रथम	एक	200000/–
	पुस्तक लेखन हेतु	द्वितीय	एक	125000/–
		तृतीय	एक	75000/–
		प्रेरणा	दो	10,000/–
13.	कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पद	हिंदी के प्रयोग प्रसार में प्रशंसनीय योगदान के लिए रेलों/उत्पादन कारखानों के वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड के ऊपर के अधिकारियों के लिए पुरस्कार की संख्या–1		
14.	रेल मंत्री राजभाषा	हिंदी के प्रयोग प्रसार में प्रशंसनीय योगदान के लिए रेलों/उत्पादन कारखानों के वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड के ऊपर के अधिकारियों के लिए पुरस्कार की संख्या–10		
15.	रेल मंत्री राजभाषा व्यक्तिगत/नकद पुरस्कार योजना	सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक व प्रशंसनीय प्रयोग करने के लिए कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड तक के अधिकारी तथा कर्मचारियों के लिए पुरस्कार सभी रेलों को निर्धारित कोटे के अनुसार।		

प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी का आशय

जो कर्मचारी मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो या वह निर्धारित प्रपत्र में यह घोषणा करता है कि मैंने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर लिया है तो उस कर्मचारी को प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी समझा जायेगा।

विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा की हिमायत करने वाले जनता के दुश्मन है। –महात्मा गांधी

कारख़ाने में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

कोटा कारखाना में वरिष्ठ कर्मचारियों द्वारा
प्रथम एम–2 रैक को रवाना किया गया।

विश्व विरासत दिवस के अवसर पर कोटा कारखाना में
जागरूकता रैली का आयोजन।

मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री सुधीर सरवरिया बाबा साहेब डॉ. भीमराव
अंबेडकर की 132 वीं जयंती समारोह के दौरान संबोधित करते हुए।

मुख्य कारखाना इंजीनियर श्री नीरज कुमार द्वारा कोटा कारखाना में
अन्तर शॉप क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल मैच का शुभारंभ।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण के उपरान्त अधिकारियों
व कर्मचारियों के साथ मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री सुधीर सरवरिया।

महिला कल्याण संगठन की उपाध्यक्ष श्रीमती सिम्पल सरवरिया
गणतंत्र दिवस के दौरान प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए।

कारख़ाने में उच्च अधिकारियों द्वारा वृक्षारोपण

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री विनय कुमार त्रिपाठी कारखाना कोटा में पौधारोपण करते हुए।

महाप्रबंधक पमरे श्री सुधीर कुमार गुप्ता कारखाना कोटा में पौधारोपण करते हुए।

अपर महाप्रबधंक पमरे श्री शोभन चौधुरी कारखाना कोटा में पौधारोपण करते हुए।

सी.आर.एस./सी.सी. जबलपुर पमरे श्री मनोज अरोड़ा कारखाना कोटा में पौधारोपण करते हुए।

प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री आर.एस. सक्सेना कारखाना कोटा में पौधारोपण करते हुए।

प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री हामीद अख्तर कारखाना कोटा में पौधारोपण करते हुए।

Printed@Nidhi, Kota Jn.#9460813430